YEAR-2005

BRONZE TROPHY (III PRIZE)

द्रुत परिवहन का अग्रदूत

रेल आम आदमी और प्रमुख उद्योगों की मुख्य परिवहन प्रणाली के रूप में राष्ट्र के जीवन में विशिष्ट भूमिका अदा करता है। भारत की धरती पर वर्ष 1853 से अपनी यात्रा शुरू करती भारतीय रेल विशेष रूप से अपनी इमारतों की दृष्टि से समृद्ध सांस्कृतिक धरोहरों का खजाना है। मुंबई स्थित पूर्व विक्टोरिया टर्मिनस जो अब छत्रपति शिवाजी टर्मिनस के नाम से जाना जाता है, को जुलाई 2004 में यूनेस्को विश्व सांस्कृतिक धरोहर क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया है।

मुंबई की जीवन–रेखा अर्थात् मुंबई उपनगरीय रेल भारतीय रेल जितनी ही पुरानी है। भारतीय रेलवे विश्व में सबसे बड़े उपनगरीय रेल–तंत्र का संचालन करती है। इसके अंतर्गत लगभग 2200 उपनगरीय रेलगाड़ियां चलती हैं जो प्रतिदिन छह मिलियन से भी अधिक यात्रियों को लाती–ले जाती हैं।

रेल मंत्रालय की झांकी में भारतीय रेल को द्रुत परिवहन के अग्रदूत के रूप में चित्रित किया गया है। पहले ट्रेलर में छत्रपति शिवाजी टर्मिनस को प्रदर्शित किया है। दूसरे ट्रेलर में मुंबई की एक उपनगरीय रेलगाड़ी में लोगों को चढ़ते–उतरते दिखाया गया है।

TORCH-BEARER OF RAPID TRANSPORTATION

As the principal mode of transport for the common man and a core industry, the Railways play a significant role in the life of the nation. Railways, which began their journey on Indian soil in 1853, are repository of a rich heritage especially in terms of their structures. The erstwhile Victoria Terminus, now Chhatrapati Shivaji Terminus at Mumbai, has been declared a UNESCO World Heritage site in July 2004.

The lifeline of Mumbai i.e. Mumbai Suburban Railway, is as old as the Railways in India i.e. Indian Railways operate the largest suburban network in the world running about 2200 suburban trains and carrying over six million passengers every day.

The tableau of the Ministry of Railways depicts Indian Railways as the torch-bearer of rapid transportation. On the first trailer is depicted the Chhatrapati Shivaji Terminus. In the second trailer, people are shown boarding and alighting from a suburban train in Mumbai.